

## दोल्हापाती

पहुंच बाग में सब साथी  
खेलें हम दोल्हापाती ।

खेल गांव का, डगर विशेष  
बस एक चोर, सिपाही शेष ।

यहां खेल में उल्टी डोर  
सिपाहियों को पकड़े चोर ।

चढ़ें सिपाही पेड़ों पर  
कूदें -फांदें इधर-उधर ।

चोर उन्हें छूना चाहे  
फैलाकर अपनी बांहें ।

अगर सिपाही छू जाते  
चोर तुरत वे हो जाते।

दौड़ पेड़ की डालों पर  
बन जाते हम सब बंदर ।

अमराई की छांव तले  
दोल्हापाती खेल चले ।

## सुबह शहर की

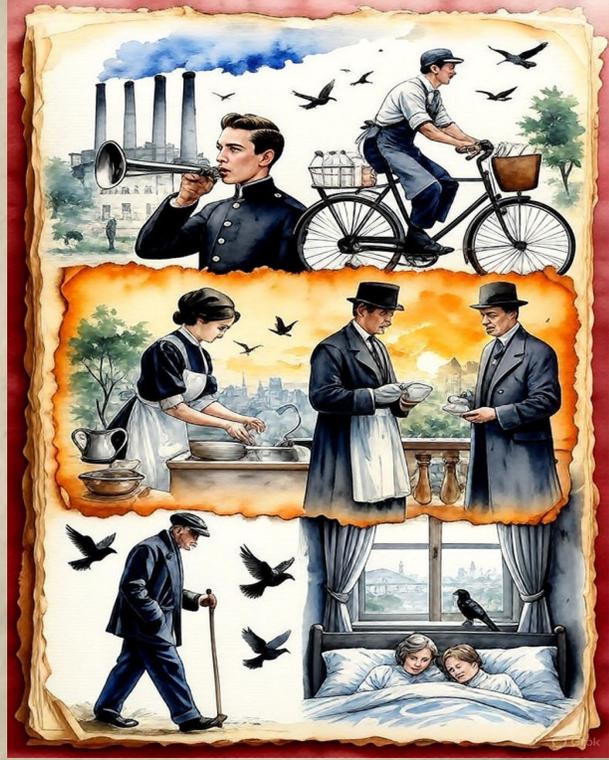
भोंपू बजा कारखाने का  
हाकर फेंक गया अखबार,  
ग्वाला दूध लिए आ पहुंचा  
'बाबूजी, अब खोलो द्वार !'

आई महरी, कई घरों में  
उसको है बर्तन धोना,  
चाय रखी नौकर ने खट-से  
'साहब जी, छोड़ो सोना !'

आंखें मलते उठे महाशय  
हाथों में लेकर अखबार,  
चाय सुड़कते, खबरें पढ़ते  
शुरू हुआ जीवन -व्यापार ।

बूढ़े छड़ी टेककर टहलें  
करते हैं वे 'मार्निंग वाक',  
नौजवान सोये बिस्तर में  
क्या निर्माण करेंगे, खाक!

कैसी होती हवा सुबह की  
होता सूर्योदय कैसा,  
लेट-लतीफ भला क्या जानें  
चिड़ियों का कलख वैसा !



सोएं काफी रात गए, फिर  
जगें दिन चढ़े शहरी लोग,  
इसीलिए तो घर कर जाते  
उनमें तरह-तरह के रोग ।

आती सुबह हवाओं के संग  
लेकर सेहत की सौगात,  
जगकर अगवानी करना ही  
सदा अक्लमंती की बात ।